3

नीलकंठ

प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने पालतू मोर 'नीलकंठ' के मीठे-कड़ुवे अनुभवों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। पाठ लेखिका का जीव-जंतुओं के प्रति अथाह प्रेम व सहानुभूति प्रकट करता है। नीलकंठ सहित उसके सभी साथियों के स्वभाव, रूप, व्यवहार और चेष्टाओं का लेखिका ने जितनी गहनता और सूक्ष्मता से निरीक्षण तथा वर्णन किया है, उससे यह रेखा-चित्र अत्यंत सजीव बन गया है।

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर मैं लौट रही थी कि चिड़ियों और खरगोश की दुकान पर ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही मैंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने को संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरंभ किया, "सलाम गुरु जी! पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिरकार मेरे सीने में भी तो इंसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दूँ! टालने के लिए कह दिया– गुरु जी ने मँगवाई हैं। वैसे, यह कमबख्त रोज़गार ही खराब है। बस, पकड़ो–पकड़ो, मारो–मारो।"

बड़े मियाँ के भाषण की तूफ़ान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुनने वाला थककर जहाँ रोक दे, वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोककर पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहाँ?" बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे–से पिंज़रे तक पहुँची जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। पिंज़रा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी–शावक जाली के गोल फ्रेम में किसी जड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ–साथ बड़े मियाँ की भाषण–मेल चली जा रही थी, "ईमान कसम, गुरु जी! चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपये लिए हैं। बार–बार कहा, भई ज़रा सोच तो, अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है, कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला! पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका ख्याल करके अछता–पछताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें।" अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंज़रा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी–शावकों के छटपटाने से लगता था मानों पिंज़रा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, "तीतर है, मोर कहकर ठग लिया है।"

कदाचित् अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, "मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं। हैं तो पक्षी ही।" चिढ़ा दिया जाने के कारण ही संभवत: उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंज़रा रखकर उसका दरवाज़ा खोला, फिर से कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गए, कभी मेज़ के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे। अंत में इस लुका-छिपी से थककर उन्होंने मेरे रद्दी कागज़ों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज़ पर, कभी कुरसी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाज़ा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागंतुकों का पता लगा सकती थी तब उसके शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनाधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाज़ा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज़ को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जाएगी।

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुँचाया जो मेरे जीव-जंतुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहने वालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल-कूद मचाने लगे। तोते मानों भली-भाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानों भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर के बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमश: और रंगमय था जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में सलेटी और सफ़ेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नई गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ, परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गरदन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और इसी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं को सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सवेरे ही वह सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रंदन न करने लगते, उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। दंडविधान के समान ही उन जीव-जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्रायः वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे।

ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप जाली के भीतर पहुँच गया। सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था, उससे चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी के चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ-पंख समेटकर सर से एक झपट्टे में नीचे आ गया। संभवतः अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है।

उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परंतु निश्चेष्ट-सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी, परंतु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात-भर उसे पंखों के नीचे रखे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा, यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक-मात्र नहीं। इसी से उसे बाज, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर कर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था। मेघों की साँवली छाया में अपने इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ, क्रम में घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परंतु उसकी गति में भी एक छंद रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ की दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बाईं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल-परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता; परंतु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही, अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्य-भंगिमा नित्य का क्रम बन गई। प्रायः मेरे साथ कोई-न-कोई देशी-विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानपूर्वक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली। जिस नुकली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता।

नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और जब उनकी मंद केका की गूँज-अनुगूँज तीव्र से तीव्रकर होती हुई मानों बूँदों के उतरने के लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरंभ होता और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती बूँदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक-दूसरे के पंखों से टपकने वाली बूँदों को चोंच से पी-पीकर पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण-कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंज़रे की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफ़ेद डोरे से कान में बँधी ऐनक को अपने ध्यान का केंद्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैरों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा के समान ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थीं कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी- "देखिए गुरु जी, कमबख्त, चिड़ीमार ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है! आप न आईं होती तो मैं उसी के सिर पर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ!"

सारांश यह कि सात रुपए देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आई और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहम-पट्टी और देखभाल करने पर वह महीने-भर में अच्छी हो गई। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परंतु वह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया कुब्जा। नाम के अनुरूप वह स्वभाव से कुब्जा ही प्रमाणित हुई। अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलगी नोंच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नलीकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मार कर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की की शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा की भाँति पंखों को मंडलाकर बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सबमें मेल हो जाएगा। अंत में तीन-चार मास के उपरांत एक दिन सवेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। 'क्यों' का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिह्न मिला। मैं अपनी शॉल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा। नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भागकर लौट आया था, अतः वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूँढ आरंभ की। खोज के क्रम में वह प्रायः जाली का दरवाज़ा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढती रहती थी। एक दिन वह आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुतिया) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामतः कजली के दो दाँत उसकी गरदन पर लग गए। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परंतु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी-प्रकृति की विभिन्नता का परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष महत्त्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्र कर-करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

—महादेवी वर्मा

शिक्षा पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं, हमें इनका ध्यान रखना चाहिए।

जीवन-परिचय

महादेवी वर्मा
(1907-1987)

महादेवी वर्मा 'पीड़ा की गायिका' के रूप में सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट गद्य-लेखिका भी थीं। उनका जन्म 26 मार्च, 1907 को फ़र्रुखाबाद में हुआ था। संस्कृत से एम० ए० करने के पश्चात् ये 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्रधानाचार्या हो गईं। 1965 ई० में इन्होंने इस पद से अवकाश ग्रहण कर लिया।

इन्होंने लंबे समय तक हिंदी साहित्य की सेवा की। इनकी साहित्यिक सेवा के लिए भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। 1903 ई० में इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' और 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। आजीवन साहित्य-साधना में संलग्न यह गरिमामय व्यक्तित्व 11 सितंबर, 1987 को पंचतत्त्व में लीन हो गया।

महादेवी वर्मा की गणना हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवियों एवं गद्य लेखकों में की जाती है। गद्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा ने उच्चकोटि के संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध एवं आलोचनाएँ लिखीं। 'विरह की गायिका' के रूप में आपको 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं — 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत', 'यामा' तथा 'दीपशिखा' (काव्य), 'क्षणदा', 'अबला' और 'सबला' (निबंध), 'अतीत के चलचित्र', 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' आदि (संस्मरण और रेखाचित्र) हैं।

शब्द-पोटली

अनुसरण – पीछे-पीछे चलना। संकीर्ण – सँकरा, छोटा। आविर्भूत – प्रकट। नवागंतुक – नया-नया आया हुआ, नया अतिथि। मार्जारी – बिल्ली। इल्ली – तितली के बच्चों को अंडे से निकलने के बाद का रूप। बंकिम – टेढ़ा। इंद्रनील – नीलकांत-नीलम। द्युति – चमक। चंचु-प्रहार – चोंच द्वारा आक्रमण। आर्तक्रंदन – दर्दभरी आवाज़ में रोना; अधर – बीच में। कर्णवेध – कान छेदना। निश्चेष्ट – बिना प्रयास के। कार्तिकेय – कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति। मंजरियाँ – नई कोंपले, बौर। मंद्र – गंभीर, धीमा। कुब्जा – कुब्बड़ वाली। दुकेली – जो अकेली न हो।

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

(क) सही विकल्प पर ✓ लगाइए:

1. स्टेशन पर लौटते समय लेखिका को ध्यान आया–
   चिड़ियों की दुकान का ☐ खरगोश की दुकान का ☐ दोनों का ☐
2. मोर के पंजों से बनती है–
   दवा ☐ माला ☐ चटनी ☐
3. मोर के बच्चों की कीमत लेखिका ने चुकाई–
   बीस रुपए ☐ तीस रुपए ☐ पैंतीस रुपए ☐
4. नीलकंठ और राधा को ऋतु पसंद थी–
   वसंत ☐ वर्षा ☐ ग्रीष्म ☐
5. साँप ने मुँह में दबा लिया था–
   बिल्ली को ☐ खरगोश को ☐ चिड़िया को ☐
6. मयूर पक्षी है–
   कलाप्रिय ☐ वीर ☐ दोनों सही ☐

(ख) दिए गए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए:

पंजों	मयूर	नृत्य	मेघ	राधा	चिड़ियाखाने

1. मेरे कमरे का कायाकल्प _____ के रूप में होने लगा।
2. नीलाभ ग्रीवा के कारण _____ का नाम रखा गया नीलकंठ।
3. उसने साँप को फन के पास _____ से दबाया।
4. _____ नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी।
5. _____ के गर्जन के ताल पर ही उसके _____ का आरंभ होता।

(ग) सत्य कथन पर ✓ तथा असत्य पर कथन ✗ लगाइए:

1. बड़े मियाँ बहुत अधिक वाचाल थे। ☐
2. कबूतर का नाम लक्का था। ☐
3. मोर के सिर की कलगी बहुत नीची हो गई थी। ☐
4. नीलकंठ खरगोश के छोटे बच्चों को चोंच से कान पकड़कर उठा लेता था। ☐
5. लेखिका को पशु-पक्षियों से बहुत घृणा थी। ☐

(घ) निम्नलिखित को सुमेल कीजिए:

(अ)	(ब)
1. चित्रा	मोरनी
2. लक्का	बिल्ली
3. मयूर	कबूतर
4. राधा	नीलकंठ

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. लेखिका के चिड़ियाघर में भूचाल जैसी स्थिति कब और कैसे उत्पन्न हुई?
2. नीलकंठ के रूप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. नीलकंठ चिड़ियाघर के अन्य जीव-जंतुओं का मित्र भी था और संरक्षक भी? स्पष्ट कीजिए।
4. कुब्जा राधा से द्वेष क्यों रखती थी? वह अपना द्वेष किस प्रकार प्रकट करती थी?
5. नीलकंठ का सुखमय जीवन करुण कथा में कैसे बदल गया?

भाषा बोध

(च) निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए:

1. विस्मयाविभूत	– _____	2. आनंदोत्सव	– _____
3. मेघाच्छन्न	– _____	4. निश्चेष्ट	– _____
5. आविर्भूत	– _____	6. उद्दीप्त	– _____
7. मंडलाकार	– _____	8. नवागंतुक	– _____

(छ) शुद्ध शब्द पर गोला खींचिए:

1.	चिडिमार	चिड़ीमार	चीड़ीमार
2.	मार्जरी	मार्जारि	मार्जारी
3.	नीलकंठ	निलीकंठा	नीलीकंठ

क्रिया के होने के समय को काल कहते हैं। काल मुख्यतः तीन होते हैं।

वर्तमान काल – जिस क्रिया से वर्तमान समय का बोध होता है; जैसे – रोहन खेलता है।

भूतकाल – जिस क्रिया से बीते हुए समय का बोध होता है; जैसे – रोहन खेला।

भविष्यत् काल – जिस क्रिया से आने वाले समय का बोध होता है; जैसे – रोहन खेलेगा।

(ज) निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर क्रिया के काल लिखिए:

1. अवि खाना खा रहा है। _____
2. मनु ने पत्र लिख लिया। _____
3. श्रुति गाना गाएगी। _____
4. कोमल पढ़ने जाएगी। _____
5. नंदिनी खाना पकाती है। _____
6. गोपाल ने खेत जोत लिया। _____

रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

नीलकंठ _____ मंद्रतर _____ आर्तक्रंदन _____ कर्णवेध _____ कुब्जा _____

परियोजना कार्य

- विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों के चित्र एकत्र करके अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाइए।

उच्च बौद्धिक स्तरीय प्रश्न (HOTS)

1. मोर का कंठ किस रंग का होता है?
2. मोर का प्रिय भोजन क्या है?
3. इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं?
4. कर्णवेध संस्कार का क्या आशय है?

मूल्यपरक प्रश्न (VBQ)

- पशु-पक्षी हमारे मित्र किस प्रकार हैं? उल्लेख कीजिए।